इकाई 7 प्रभावी लेखन

इकाई की रूपरेखा

7.0 उद्देश्य
7.1 प्रस्तावना
7.2 प्रभावी लेखन : अवधारणा
7.3 प्रभावी लेखन : विषय के स्तर पर
7.4 प्रभावी लेखन : शिल्प के स्तर पर
7.4.1 भाषा पर अधिकार
7.4.2 शब्दावली
7.4.3 वाक्य-विन्यास
7.4.4 शैली
7.4.5 मुहावरे, लोकोक्तियों का समुचित प्रयोग
7.4.6 अलंकारिकता
7.4.7 व्याकरणिक शुद्धता
7.4.8 अर्थ और भाषा में अन्विति
7.5 प्रभावी लेखन : लक्ष्य
7.6 सारांश
7.7 बोध प्रश्नों के उत्तर

7.0 उद्देश्य

खंड-1 की छह इकाइयों में आपने भाषा और सम्प्रेषण के विविध पक्षों का परिचय प्राप्त किया। अब खंड दो में आप 'लेखन कौशल' के विविध पक्षों का परिचय प्राप्त करने जा रहे हैं। इस खंड की प्रथम इकाई एवं पाठ्यक्रम की सातवीं इकाई है 'प्रभावी लेखन'। इस इकाई में आप लेखन के सामान्य गुणों की पहचान करेंगे। लेखन के विविध पक्षों पर इसके बाद की इकाइयों में विचार होगा। इस इकाई द्वारा आप

- लेखन की प्रभाव क्षमता को रेखांकित कर सकेंगे; और
- प्रभावी लेखन के विभिन्न पक्षों की पहचान कर सकेंगे।

7.1 प्रस्तावना

हिंदी के आधार पाठ्यक्रम-02 (एफ.एच.डी.-02) के खंड दो की यह पहली व पाठ्यक्रम की सातवीं इकाई है। इस इकाई से पहले आप खंड एक में भाषा और सम्प्रेषण के तहत छह इकाइयों में सम्प्रेषण के विविध रूपों व पक्षों को भी जान चुके हैं। उच्चरित और लिखित भाषा का अंतर भी अब आप रेखांकित कर सकते हैं।

इस इकाई में आपको लेखन की प्रभाव क्षमता संबंधी जानकारी दी जाएगी। यह पूरा खंड लेखन के विविध रूपों की जानकारी देने वाला है, लेकिन लेखन के विविध रूपों की जानकारी से पहले अच्छे या प्रभावी लेखन के सामान्य गुणों को पहचानना जरूरी है। एक ही विषय पर दो लेखकों की रचनाएँ सामने हों और उनमें एक की रचना बहुत प्रभावित करे तथा दूसरे की प्रभावित न कर सके, तो जाहिर है कि एक के लेखन में पाठक को प्रभावित करने के गुण मौजूद हैं और दूसरे के लेखन में वे गुण नहीं हैं, ये गुण क्या हैं, कैसे हासिल होते हैं, लेखक किस विधि से अपने रचना-कौशल में इन गुणों का प्रयोग करते हैं जिनसे उनका लेखन प्रभावशाली लेखन बन जाता है, ये कुछ ऐसे सवाल हैं, जिन पर इस इकाई में विचार किया जाएगा।

प्रभावी लेखन, लेखन के विषय से संबंधित है या लेखन के शिल्प से, यह लेखन की विशिष्ट शैली है या लेखन का सामान्य कौशल, ये सारे मुद्दे इस इकाई के दायरे में आते हैं, जिन पर आगे विचार किया जाएगा।

7.2 प्रभावी लेखन : अवधारणा

प्रभावी लेखन है क्या? किसे हम प्रभावी लेखन मानते हैं और किसे नहीं? क्या प्रभावी लेखन की कोई परिभाषा निर्धारित हो सकती है? प्रभावी लेखन से क्या सीखा जा सकता है? ऐसे अनेक प्रश्न हैं, जो प्रभावी लेखन को समझने के लिए उठाए जा सकते हैं।

सबसे मूल बात तो यही है कि जो लेखन पाठक को प्रभावित करे, अर्थात् जिस लेखन को पढ कर पाठक पर अपेक्षित प्रभाव पड़े - वह भावाकुल हो उठे, सोचने लगे, हँसने/रोने लगे, यहाँ तक कि उस लेखन को पढ कर वह पहले जैसा इंसान न रह कर, कुछ अलग किस्म का इंसान महसूस करने लगे जिंदगी में उसे नई राह या नई रोशनी दिखाई देने लगे - ऐसे अनेक लक्षण हैं, जिनसे प्रभावी लेखन की प्रभावक्षमता की व्याख्या की जा सकती है। नींद आ रही हो, तो प्रभावी लेखन आदमी की नींद उड़ा सकता है, जबकि दूसरी ओर कुछ लेखन ऐसा होता है, जिसे रात में सोते समय इसलिए पढा जाता है कि नींद आ सके। नींद लाने वाला लेखन अनिवार्यतः अप्रभावी लेखन नहीं होता - उसमें लोरी की क्षमता भी हो सकती है, जिससे नींद आ जाए अर्थात् वह नींद ला सकने का प्रभावी लेखन भी हो सकता है, लेकिन ऐसा लेखन भी होता है, जो इतना उबाऊ हो कि उसे पढ़ते-पढ़ते नींद आ जाए, कई लोग रात को सोने से पहले ऐसी दुरूह किताब या पत्रिका उठा लेते हैं कि उन्हे नींद की गोली की जरूरत ही नहीं पड़ती। कई बार ऐसा भी लेखन होता है कि नींद पर भी अपना प्रभाव छोड़ जाता है और मनुष्य को सपने भी उसी लेखन के आते हैं, जो उसने सोने से पहले पढा है।

इन सारी बातों से तात्पर्य यह है कि प्रभावी लेखन की मुख्य विशेषता पाठक को, उसके सोचने-समझने के तरीके में, उसके संस्कारों को, उसकी बुद्धि को, उसके हृदय को गहरे मे जाकर प्रभावित करना है। इस अर्थ में प्रभावी लेखन की सरल परिभाषा भी यही हो सकती है कि "प्रभावी लेखन वह लेखन है, जिसे पढ कर पाठक का मस्तिष्क झकझोरा जाए, उसका हृदय द्रवित हो जाए और उसके संस्कारों में उद्वेलन होने लगे और पाठक उस रचना के पाठन के बाद जीवन को या समस्याओं को एक नई दृष्टि से, नई रोशनी ग्रहण कर देखने-समझने लगे।" हालाँकि प्रभावी लेखन की यह व्याख्या आधी-अधूरी है, लेकिन प्रभावी लेखन की अवधारणा क्या है, इसे जरूर इससे समझने में मदद मिल सकेगी।

सवाल यह है कि लेखन में यह भेद कैसे हुआ कि कुछ लेखन या यों कहें अधिकांश लेखन 'अप्रभावी' लेखन रह जाता है, जबकि विश्व के विशाल लेखन-भंडार में जो आज रचना जा रहा है, थोड़ा ही ऐसा लेखन है जिसे सही मायनों में प्रभावी या असरदार लेखन कह सकते हैं। लेखन की प्रभावक्षमता की एक कसौटी समय भी है, यह कसौटी बहुत बड़ी व महत्वपूर्ण कसौटी है, जो लेखन बहुत समय बीतने पर भी अपनी प्रभावक्षमता बनाए रखता है, वास्तव में तो वही लेखन प्रभावी लेखन है। कई बार तात्कालिक प्रचारादि कारणों से थोड़े समय के लिए किसी लेखन को उस काल के आलोचकों के लिए 'सर्टीफिकेटों' के कारण भी 'प्रभावी' लेखन कह दिया जाता है। अनेक तत्कालीन पत्रिकाएँ कई बार लेखक की (सामाजिक) सत्ता को ध्यान में रख कर प्रशंसा के पुल बाँध देती हैं, लेकिन समय की कसौटी पर ऐसा लेखन जल का बुलबुला ही रह जाता है। दूसरी ओर कई बार ऐसा भी लेखन होता है, जिस पर फिर लेखक की (सामाजिक) सत्ता के कमजोर होने से आलोचक आदि ध्यान नहीं देते और ऐसा लेखन कई बार लेखक के जीवनकाल में अचर्चित रह जाता है, लेकिन काल की कसौटी पर कई बार ऐसा लेखन बहुत ही प्रभावी सिद्ध होता है। मुक्तिबोध के साहित्य पर उसके जीवनकाल में अधिक ध्यान नहीं दिया गया, लेकिन उनके देहांत के बाद जब उनका अधिकांश अप्रकाशित साहित्य छपा तो वे हिंदी साहित्य के सभी कालों के सबसे प्रभावशाली लेखकों में से एक माने गए।

अतः लेखन की प्रभावक्षमता को तत्काल नहीं आँका जा सकता, हाँ प्रमाणित हो चुके प्रभावी लेखन के गुणों को रेखांकित कर प्रभावी लेखन के सामान्य गुणों को जरूर अंकित किया जा सकता है।

प्रभावी लेखन की प्रभावक्षमता को दो स्तरों पर पहचाना जा सकता है (1) विषय के स्तर पर अर्थात् लेखक किस विषय को लेखन मे प्रस्तुत करना चाहता है तथा (2) शिल्प के स्तर पर - अर्थात् जिस विषय को लेखक ने अपने लेखन के लिए चुना है, इसकी प्रस्तुति के लिए किन शिल्पगत विधियों को उसने प्रयुक्त किया है।

विषय और शिल्प में सामंजस्य है या नहीं, इस बात पर भी लेखन की प्रभावक्षमता काफी निर्भर करती है। अतः इकाई में अब प्रभावी लेखन के इन दो पक्षों पर विचार किया जाएगा।

7.3 प्रभावी लेखन : विषय के स्तर पर

किसी अंग्रेजी लेखक से किसी ने पूछा - "प्रभावी रचना का मूल मंत्र क्या है?" उसने उत्तर दिया – "किसी विषय पर अच्छी तरह और स्पष्ट विचार करने पर ही प्रभावी रचना प्रस्तुत होती है।" तो प्रभावी लेखन में विषय के स्तर पर पहली आवश्यकता है कि लेखक ने विषय को समझा है। जो विषय लेखक के मानस के जितना निकट होगा और जिस पर लेखक लगातार विचार भी करता रहेगा उसी

से लेखक का घनिष्ठ संबंध बनेगा, इससे उस विषय पर लिखने में लेखक का आत्मविश्वास अधिक होगा, अतः प्रभावी लेखन के लिए लिखने से पहले रचना में प्रस्तुत किए जाने वाले विषय की सभी बातों को लेखक को अच्छी तरह मन में बसा लेना चाहिए। विषय से संबंधित जितनी भी सामग्री मिले, उसे एकत्र करना चाहिए और उस पर यथेष्ट मनन-चिंतन करना चाहिए। जिस विषय पर लेखक का सच्चा व वास्तविक अनुराग नहीं होगा उस विषय पर लेखक प्रभावी ढंग से नहीं लिख सकेगा। जिस विषय पर लेखक को स्पष्टता प्राप्त होगी, उसे वह सुचारु ढंग से लेखन में प्रतिपादित कर सकेगा। अतः विषय पर पर्याप्त अध्ययन-मनन करके ही लेखक को कलम उठानी चाहिए। वैसे तो लेखक अनेक विषयों का ज्ञाता हो सकता है, लेकिन लिखना उसी विषय पर चाहिए, जिस पर मन में भलीभाँति परिपाक हो चुका हो, उदाहरणतः महाश्वेता देवी ने अपने उपन्यास 'जंगल के दावेदार' की रचना के लिए, अमृतलाल नागर ने अपने उपन्यास 'नाच्यो बहुत गोपाल' की रचना से पहले अपने-अपने विषयों से संबंधित सामग्री का गहन व सांगोपांग अध्ययन किया। 'जंगल के दावेदार' उपन्यास बिहार के आदिवासी महापुरुष बिरसा मुंडा के जीवन से संबंधित है, तो लेखिका ने नृतत्वशास्त्री कुमार सुरेश सिंह के नृतत्वशास्त्रीय लेखन व अन्य बहुत-सी सामग्री का अध्ययन किया, खुद उस क्षेत्र के आदिवासियों से मिल कर उनकी भावनाओं को समझा तथा फिर तार्किक रूप से उपन्यास की स्पष्ट योजना बना कर यह उपन्यास बंगला भाषा में लिखा, जिस पर बाद में साहित्य अकादमी राष्ट्रीय पुरस्कार भी मिला।

इसी प्रकार अमृतलाल नागर मेहतर या भंगी जाति के जीवन को अपने उपन्यास की कथा का विषय बनाना चाहते थे। इसके लिए उन्होंने मेहतर जाति के सामाजिक इतिहास का ज़म कर अध्ययन किया व उसके बाद इस उपन्यास - 'नाच्यो बहुत गोपाल' की कथा का विन्यास तैयार किया।

इस प्रकार विषय पर समुचित ध्यान देने से दोनों लेखकों की ये कृतियाँ महत्वपूर्ण साहित्यिक रचनाओं का दर्जा प्राप्त कर गईं। यशपाल के 'झूठा सच' की आलोचना में यह कहा गया कि लेखक ने उस काल के अखबारों की विभाजन से संबंधित तमाम कतरनों को छान मारा। ऐतिहासिक उपन्यासकारों के लिए तो विषय की तथा अतीत के समुचित इतिहास की जानकारी अत्यंत आवश्यक होती है। अन्यथा यहाँ अतीत के अर्थ का अनर्थ भी हो सकता है।

किसी साहित्यिक रचना के लेखन में रचनाकार को विषय के साथ-साथ भाव का भी ध्यान रखना होता है। सृजनात्मक रचनाओं में भाव पर ध्यान देना बेहद जरूरी होता है, अतः रचना में भाव का विभाव कुशलता से होना बहुत जरूरी होता है, यह तभी हो सकता है, जब लेखक अपनी रचना में भावों की प्रस्तुति अत्यंत सहज रूप से करता है। जितनी सहज भाव-प्रस्तुति रचना में होगी उतनी ही वह अधिक प्रभावी होगी।

विषय के चुनाव व उसके अध्ययन-मनन के अतिरिक्त लेखक को अपने विषय को रचना में वस्तु का रूप देना होता है, इसीलिए साहित्य के संदर्भ में विषय को विषयवस्तु या प्लॉट भी कह दिया जाता है। प्लॉट कायदे से, कथा-वस्तु का पर्याय है, लेकिन विषय-वस्तु रचना की अन्तर्वस्तु के रूप मे भी परिभाषित कर दी जाती है, अर्थात् लेखक पहले अपनी रचना की अन्तर्वस्तु पर मनन करता है, फिर उस अन्तर्वस्तु के लिए उपयुक्त रूप या शिल्प या रचना-कौशल की तलाश करता है। कहा तो यह भी जाता है कि रचना की अन्तर्वस्तु अपने उपयुक्त रूप या शिल्प स्वाभाविक रूप से ही चुन लेती है, लेकिन लेखक को इसके लिए सायास प्रयत्न भी करने होते हैं, अन्तर्वस्तु की प्रस्तुति उतनी ही अधिक प्रभावी बन जाती है, जितना उपयुक्त उसका रूप या शिल्प होता है। अतः लेखक को शिल्प, शैली या रूप पर बहुत ध्यान देना पड़ता है।

बोध प्रश्न 1

1. प्रभावी लेखन से आप क्या समझते हैं ?

.....

.....

.....

2. निम्नलिखित में से सही उत्तर पर (✓) का निशान निशान लगाइए।

(क) नाच्यो बहुत गोपाल के लेखक श्री अमृतलाल नागर हैं। ( )

(ख) सृजनात्मक रचनाओं में भाव पर ध्यान देना आवश्यक नहीं है। ( )

(ग) किसी विषय पर अच्छी तरह और स्पष्ट रूप से विचार करने पर ही प्रभावी रचना प्रस्तुत होती है ( )

3. 'प्लॉट' से क्या अभिप्राय है?

.....

.....

.....

.....

7.4 प्रभावी लेखन : शिल्प के स्तर पर

लेखक कई बार अपने विषय के संबंध में तो स्पष्ट होता है, लेकिन स्पष्टता के बावजूद वह अपने लेखन में प्रभावी नहीं हो पाता। इसका कारण यह है कि वह विषयों या मतों को ही लेखन का सब कुछ मान लेता है और यह नहीं समझ पाता कि न सिर्फ 'बात' महत्वपूर्ण है, 'बात' को कहने का 'ढंग' भी उतना ही महत्वपूर्ण होता है, यदि बात ठीक या प्रभावी ढंग से नहीं कही जाएगी तो बात बड़ी होकर भी बेकार चली जाएगी। इसलिए लेखन में रचना कौशल अर्थात् अपने विचार या भाव को अधिकाधिक प्रभावी बनाने की जरूरत होती है। और यह रचना कौशल सीखना पड़ता है, इसे अभ्यास व परिश्रम द्वारा साधा जाता है। इस रचना कौशल के अन्तर्गत कई पक्ष आ जाते हैं, जिन पर यहाँ विचार किया जाएगा। कुछ पक्ष ये हैं -

(1) भाषा पर अधिकार
(2) शब्दावली
(3) वाक्य-विन्यास
(4) शैली
(5) मुहावरे, लोकोक्तियों का समुचित प्रयोग
(6) अलंकारिकता
(7) व्याकरणिक शुद्धता
(8) अर्थ और भाषा में अन्विति

7.4.1 भाषा पर अधिकार

जिस भी भाषा में लेखक अपने विचारों या भावों को लेखन के रूप में प्रकट करना चाहता है, उस भाषा पर उसका अधिकार होना चाहिए। यहाँ हिंदी के संदर्भ में देखें तो हिंदी की अनेक उपभाषाएँ हैं - भोजपुरी, मैथिली, राजस्थानी इत्यादि। लेकिन जो लेखक हिंदी की सभी उपभाषाओं के पाठकों तक पहुँचना चाहता है, उसे प्रचलित हिंदी अर्थात् खड़ी बोली हिंदी पर अपनी पकड़ बढ़ानी होगी। लेखक का विषय के अनुसार भी भाषा पर अधिकार होना चाहिए। सृजनात्मक लेखन के लिए प्रेमचंद जैसी भाषा भी हो सकती है और निराला या मुक्तिबोध जैसी भी। लेकिन यदि विचारात्मक लेखन है तो भाषा का स्वरूप बदल जाएगा, इसलिए लेखक को भाषा के बहुविध रूपों की जानकारी व उन पर पर्याप्त पकड़ होनी जरूरी है, यह प्रभावी लेखन की पहली शर्त है। भाषा को जटिलता से बचा कर उसे यथासंभव सरल रखना चाहिए

7.4.2 शब्दावली

लेखक की शब्दावली जितनी समृद्ध होगी, उतनी ही अधिक प्रभावक्षमता वह अपनी रचना में ला सकता है। न केवल शब्दावली ही समृद्ध होनी चाहिए, लेखक को अपनी शब्दावली के शब्द भंडार के शब्दों के अर्थ की सूक्ष्म छायाओं का भी समुचित ज्ञान होना चाहिए। कई बार एक जैसे अर्थ वाले अनेक पर्यायवाची शब्द मिलते हैं, किंतु शब्दों का अलग अलग होना ही यह बताता है कि हर शब्द किसी विशिष्ट संदर्भ में प्रयुक्त करने लायक है।

7.4.3 वाक्य-विन्यास

लेखक की रचना में वाक्यों की बनावट बहुत महत्वपूर्ण स्थान रखती है। विचार चाहे जितने भी अच्छे या उत्तम हों, यदि उन्हें अटपटे वाक्यों में प्रस्तुत किया जाएगा तो वे कुछ भी प्रभाव नहीं छोड़ पाएंगे। इसके लिए जरूरी है कि लेखक अपने लेखन में वाक्य विन्यास के प्रति सचेत हो। जहाँ तक हो सके, जटिल वाक्य-विन्यास से बचना चाहिए। एक वाक्य में एक ही विचार या भाव रखने का प्रयास करना चाहिए। अनावश्यक वाक्य विस्तार से बचना चाहिए, अन्यथा उसमें (वाक्य में) अस्पष्टता, भद्दापन, भ्रामकता आ जाती है। छोटे व सुगठित वाक्य ही अधिक सुंदर व प्रभावशाली होते हैं। साहित्यिक

रचनाओं में कई बार संयुक्त-वाक्यों की जरूरत होती है, लेकिन कुशल लेखक जानते हैं कि कहाँ साधारण व छोटे वाक्यों का प्रयोग होना चाहिए। फिर भी रचना का सौंदर्य अधिकाशतः यथासाध्य संक्षिप्त व स्पष्ट वाक्यों में अधिक झलकता है। वाक्यों में शब्द-योजना भी समुचित होनी जरूरी है।

सबसे अच्छा वाक्य वही समझा जाता है जिसमें न तो एक भी शब्द घटाने या बढ़ाने की जरूरत पड़े और न ही वाक्य में प्रयुक्त शब्दों के क्रम को जरा भी बदलने की। यदि शुद्ध और अच्छे वाक्यों में शब्द भी इधर उधर कर दिया जाए तो उसका आशय ही बदल जाएगा।

7.4.4 शैली

शैली का साधारण अर्थ है ढंग। जिस ढंग से कोई लेखक अपनी बात कहता है, उसी से उसकी विशिष्ट पहचान बनती है। एक ही बात को दो लेखक अलग-अलग ढंग से जब कहते हैं, उस से यह बात निकलती है कि लेखक अपनी शैली से पहचाना जाता है। फैज़ अहमद फैज़ का एक शेर है -

जिस धज से कोई मकतल पे गया, वो सान सलामत रहती है
ये जान तो आनी जानी है, इस जाँ की तो कोई बात नहीं है।

अर्थात् मरना तो सभी को है, लेकिन जो शहीद कुरबानी के स्थल पर अपनी खास धज से जाता है, वही उसकी विशिष्टता बन जाती है। यही चीज लेखन के संबंध में भी सही है, लिखने वाले सैकड़ो-हजारों लेखक होते हैं, लेकिन कुछ ही लेखक ऐसे होते हैं, जो अपनी शैली की विशिष्टता से अलग खड़े नजर आते हैं। साहित्य का तो सारा सौंदर्य ही शैली पर आश्रित है। इसीलिए अंग्रेजी कवि पोप ने कहा है - 'शैली हमारे विचारों की वेशभूषा है।' कार्लाइल तो इससे भी आगे जाकर कहते हैं - 'शैली लेखक के विचारों का परिधान नहीं, बल्कि त्वचा है।' शैली में भाषा, अर्थ, भाव, शब्द आदि सभी विहित पक्ष, हैं। इसी में छंद व अलंकार प्रयोग भी है। श्रेष्ठ लेखक की शैली सबसे स्वतंत्र होती है और प्रेमचंद जैसे लेखकों की उनकी शैली से भी तुरंत पहचान हो जाती है।

7.4.5 मुहावरे, लोकोक्तियों का समुचित प्रयोग

भाषा में सौंदर्य लाने के लिए, मुहावरों व लोकोक्तियों का प्रयोग किया जाता है। मुहावरों व लोकोक्तियों के प्रयोग के लिए लेखन में अक्सर अवसर आते रहते हैं और इनका प्रयोग लेखन को प्रभावशाली बनाने में सहायता करता है। हाँ, मुहावरों व लोकोक्तियों का बिना किसी संदर्भ का उपयोग उल्टा असर भी करता है। तब इससे लेखन की प्रभावक्षमता कम होती है, अतः मुहावरों-लोकोक्तियों का प्रयोग लेखन में जरूरी तो है, लेकिन औचित्यपूर्ण ढंग से।

7.4.6 अलंकारिकता

लेखक को अपने लेखन में भाषा को प्रसंगानुकूल अलंकारिकता का जामा पहनाना चाहिए, विशेषतः साहित्यिक लेखन में, भाषा में अलंकारिकता विशिष्ट प्रभाव उत्पन्न करती है, किंतु अलंकारिकता का आधिक्य भाषा के सहज प्रवाह को नष्ट करके भाषा की प्रभाव क्षमता बढ़ाने की बजाय कम कर देता है।

7.4.7 व्याकरणिक शुद्धता

प्रभावी लेखन के लिए शब्दों के ज्ञान के साथ-साथ भाषा के व्याकरण का ज्ञान होना भी बहुत जरूरी है। व्याकरण के ज्ञान व लेखन में उसके व्यावहारिक उपयोग से अनेक प्रकार की अशुद्धियों से बचा जा सकता है। जिन लेखकों को भाषा का सहज ज्ञान बहुत अधिक होता है, उन्हें व्याकरण के ज्ञान की विशेष आवश्यकता नहीं होती, वे सहज रूप से ही शुद्ध व प्रवाहमय भाषा का प्रयोग करते हैं, लेकिन कई लेखक व्याकरण का ज्ञान होने पर भी अशुद्ध भाषा का प्रयोग करते हैं। वास्तव में भाषा अभ्यास से ही शुद्ध, सुंदर व मनोहर होती है, व्याकरण का ज्ञान तो अभ्यास से ही थोड़ा सहायक होता है।

7.4.8 अर्थ और भाषा में अन्विति

लेखन में अर्थ और भाषा का अत्यधिक महत्व होता है। अर्थ शब्दों से ग्रहण होता है, अर्थ प्रायः स्पष्ट होता है, लेकिन भाव कुछ गूढ़ होता है। किसी शब्द या वाक्य का साधारण अर्थ समझने में उतनी मुश्किल नहीं होती, जितनी भावार्थ समझने में होती है। अतः प्रभावी लेखन वही होता है, जिसमें वाक्य का अर्थ तो ठीक से समझ आए ही, रचना का भाव भी उचित रूप से पाठक के मन में संप्रेषित होना जरूरी है। अर्थ और भाव में एकान्विति भी होनी चाहिए। ऐसा नहीं होना चाहिए कि शब्दों या वाक्यों से कुछ और अर्थ निकल रहा हो, जबकि लेखक का भाव या आशय बिलकुल अलग ही प्रकार का हो।

अर्थ और भाव सदा भाषा के साथ-साथ चलते हैं, अतः यह भी कहा जा सकता है कि भाषा सदा भावों की अनुगामिनी होती है, लेकिन एक अन्य स्तर पर यह भी कहा जा सकता है कि अर्थ और भाव को भाषा का अनुगमन करना पड़ता है। प्रभावी लेखन के लिए जरूरी है कि वाक्यों या शब्दों से भाव और अर्थ ठीक से संप्रेषित हों। भाषा का प्रयोग कभी नहीं करना चाहिए। एक सफल व प्रभावशाली लेखक वही है,जो अपने लेखन में शब्द, अर्थ, भाव, ध्वनि और संगीत सभी बातों को ध्यान में रखकर लिखता है।

इन मुख्य बातों के अतिरिक्त रचना कौशल या शिल्प में कुछ छोटी छोटी बातों का भी ध्यान रखना चाहिए, जैसे हिज्जे या वर्तनी या अक्षरों में अशुद्धियाँ न हों, संस्कृत या फारसी-अंग्रेजी आदि शब्दों का अशुद्ध रूप न लिखा जाए, बिंदियों (अनुस्वार, अक्षरों के नीचे नुक्ता इत्यादि) का सही प्रयोग हो, विराम चिह्नों का सही प्रयोग हो, छपने से पहले प्रूफ ठीक से देखे जाएं ताकि छपाई की अशुद्धियाँ न हों। इन सब बातों का ध्यान रखने से लेखक रचना-कौशल से प्रभावी लेखन कर सकता है।

7.5 प्रभावी लेखन : लक्ष्य

प्रभावी लेखन का लक्ष्य क्या है? ज़ाहिर है कि प्रभावी लेखन का लक्ष्य या उद्देश्य पाठक को प्रभावित करना है। एक ही समय एक ही भाषा में सैकड़ों, बल्कि हज़ारों लेखक लिख रहे होते हैं, लेकिन उनमें से कुछ ही लेखक ऐसे होते हैं, जो पाठकों को प्रभावित करने की क्षमता रखते हैं, अधिकांश लेखक दस बीस वर्षों में ही काल के गर्त में समा जाते हैं और किसी को उनका नाम तक याद नहीं रहता। लेकिन दूसरी ओर प्रत्येक भाषा में ऐसे भी लेखक हैं, जो सैकड़ों या हजारों वर्ष बीतने पर भी अपना प्रभाव बनाए हुए हैं व आज भी अपनी रचनाओं से पाठक को प्रभावित करते हैं। होमर, शेक्सपीयर, वाल्मीकि, कालिदास आदि ऐसे कितने ही प्राचीन लेखक हैं, जो आज भी प्रासंगिक बने हुए हैं। कारण यह है कि इन लेखकों की रचना में कुछ ऐसा है, जिसमें मानवता को अनंत काल तक प्रभावित करने की क्षमता है। उन कृतियों में मानव-भावनाओं का ऐसा चित्रण है, जो हर युग में पाठक को निरंतर प्रभावित करता रहता है। ऐसा लक्ष्य इन लेखकों ने कैसे हासिल किया?

हर युग को वही लेखन प्रभावित कर सकता है, जो ऐसे मानव अनुभव या मूल्य प्रस्तुत करे, जो हर काल में मनुष्य को प्रभावित कर सके। कुछ मानवीय भावनाएँ या कर्म ऐसे होते हैं, जो प्रत्येक युग को प्रभावित करते ही रहते हैं, जैसे किसी आदमी का पूर्णतया निस्वार्थ होकर व्यापक मानवता के प्रति समर्पित होना। यह एक ऐसा मानवीय गुण है, जो किसी भी युग में प्रभावित करने की क्षमता रखता है। जो लेखक किसी ऐसे चरित्र को अपने लेखन में प्रस्तुत करता है, जिसमें ऐसे मानवीय गुण हों तो वह लेखन कालातीत होकर भी हर काल को प्रभावित करता रहता है। या कुछ ऐसी मानवीय भावनाएँ हैं, जो समय बदलने से रूप भले ही बदल लें, लेकिन अपने मूल तत्व में वैसी ही बनी रहती हैं। स्त्री-पुरुष प्रेम, ईर्ष्या, सत्ता के लिए संघर्ष मानव जीवन के कुछ ऐसे पक्ष हैं, जो हर युग में मिलते हैं, होमर या कालिदास आदि लेखक इसीलिए आज भी हमें प्रभावित करते हैं, क्योंकि उनकी रचनाओं में मानव जीवन के ऐसे पक्षों का बड़ा ही हृदयग्राही व मार्मिक चित्रण मिलता है।

लेकिन यदि अतीतकालीन लेखन की बात छोड़ भी दी जाए, अपने समय में भी लेखन की प्रभावक्षमता महत्व रखती है। समकालीन समाज में भी वही लेखन प्रभावी लेखन बनता है, जिसमें अपने समय के समाज की समस्याओं को अच्छे ढंग से प्रस्तुत किया गया हो, जिसमें अपने परिवेश से, अपने आसपास के पर्यावरण से, उसके अपने आन्तरिक व्यक्तित्व के गहरे तत्व में छुपे चेतन व अर्द्धचेतन मन के रहस्यों से अपने पाठक का परिचित करवाया गया हो। ये बातें सृजनात्मक लेखन के संबंध में हैं।

गैर-सृजनात्मक या विचारात्मक लेखन का लक्ष्य या उद्देश्य भी अपने पाठक को लेखन में प्रस्तुत विषय की अधिकाधिक जानकारी देना होना चाहिए। लेकिन यह जानकारी सरलता, स्पष्टता और गइराई से देने का प्रयास लेखक को करना चाहिए। लेखक को लेखन में ऐसी शैली विकसित करनी चाहिए कि उसके लेखन में व्यक्त विचारों को साधारण से साधारण पाठक से लेकर विशिष्ट ज्ञान-संपन्न उच्च विद्वान तक समझ सके। जिस लेखन में प्रस्तुत विषय को व्यावहारिक ढंग से समकालीन समस्याओं से जोड़ कर प्रयुक्त किया जाए, वह लेखन भी अक्सर सामान्य लेखन से अधिक प्रभावी लेखन सिद्ध होता है।

इस प्रकार यदि अपने लेखन में लेखक पूरी तरह स्पष्ट है, अपने लेखन के विषय पर उसकी गहरी पकड़ है और लेखन में वह क्या कहना चाहता है, यह उसके समक्ष पूरी तरह स्पष्ट है, यदि उसने अपने लेखन के लिए उपयुक्त रचना-शिल्प या रचना-कौशल भी विकसित कर लिया है तो निश्चय ही वह अपने लेखन को अत्यंत प्रभावशाली बना सकने में सफल हो सकेगा।

प्रभावी लेखन का लक्ष्य या उद्देश्य लेखन में प्रस्तुत विषयवस्तु, भाव, संवेदनाओं से लेकर विचारात्मक लेखन तक को अपने पाठक की भाव-संवेदना का हिस्सा बनाना अपने विचारों से पाठक को 'कन्विन्स' करना और पाठक के साथ एक स्तर पर लेखन के ज़ाहिर संवाद स्थापित करना होता है। जो लेखक, इन उद्देश्यों को सामने रख कर लिखते हैं, उनका लेखन प्रभावी होने की संभावना रखता है।

बोध प्रश्न 2

1. रचना कौशल के प्रमुख पक्ष कौन से हैं ?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

2. रचना में वाक्यों की बनावट का महत्व पाँच पंक्तियों में बताइए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

3. प्रभावी लेखन के क्या उद्देश्य है ?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

4. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

(क) अर्थ और भाव.....के साथ चलते है।

(ख) मुहावरे और लोकोक्तियों का प्रयोग.....ढग से आवश्यक है।

(ग) शैली हमारे.....की.....है।

(घ) लेखक को.....के.....रूपों की जानकारी आवश्यक हैं।

(ड.) रचना का सौंदर्य.....व.....वाक्यों में अधिक आवश्यकता हैं।

7.6 सारांश

आपने पाठ्यक्रम के खंड दो की इस पहली इकाई में आपने प्रभावी लेखन की अवधारणा को समझा, प्रभावी लेखन के गुणों को समझने का प्रयास किया। प्रभावी लेखन को आपने दो स्तरों पर समझने का प्रयास किया- विषयवस्तु के स्तर पर व रचना शिल्प के स्तर पर। विषय के संबंध में स्पष्ट होने पर भी

कई बार लेखक रचना कौशल का अभ्यास न करने के कारण प्रभावी लेखन नहीं कर पाता। इसलिए विचार से भी बढ कर यहाँ प्रभावी लेखन के लिए शिल्पगत गुणों- भाषा, शब्द योजना, वाक्य विन्यास मुहावरे, अलंकारों के प्रयोग आदि - पर ध्यान आकर्षित किया गया है। साथ ही लेखक के अपने लक्ष्य या उद्देश्य के प्रति सचेत होने पर भी जोर दिया है।

इस प्रकार इस इकाई में आपने प्रभावी लेखन को उसके बहुविध रूपों में समझने का प्रयास किया है, जिससे आप अच्छे प्रभावी लेखन के गुणों को रेखांकित कर सकते हैं।

7.7 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1. प्रभावी लेखन वह लेखन होता है जिससे पाठक उस रचना को पढ़ने के बाद जीवन को तथा समस्याओं को नवीन दृष्टि से देख सके। लेखन ऐसा हो जो उसकी बुद्धि और उसके हृदय को भीतर तक प्रभावित कर सके।

2. क. (✓) ख. (x) ग. (✓)

3. साहित्य के संदर्भ में विषय या विषयवस्तु को ही 'प्लॉट' कहा जाता है। अधिक स्पष्टता के लिए देखिए भाग 7.3

बोध प्रश्न 2

1. रचना कौशल के प्रमुख पक्ष निम्नलिखित हैं -
   (1) भाषा पर अधिकार होना।
   (2) लेखक की शब्दावली समृद्ध होना।
   (3) वाक्य-विन्यास तथा शब्द-योजना।
   (4) शैली।
   (5) मुहावरों एवं लोकोक्तियों का समुचित प्रयोग।
   (6) प्रसंगानुकूल अलंकारों का प्रयोग।
   (7) व्याकरण की शुद्धता।
   (8) अर्थ और भाषा में अन्विति होना आवश्यक।

2. देखिए भाग 7.4.3

3. देखिए भाग 7.5

4. (क) भाषा (ख) औचित्यपूर्ण (ग) विचारों, वेषभूषा
   (घ) भाषा, बहुविध (ड.) संक्षिप्त, स्पष्ट।